JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोहपुरूष सरदार वल्लभभाई पटेल

प्रा. डॉ. वानखेडे उमाकांत ज्ञानोबा
राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख
नवगण कला व वाणिज्य महाविद्यालय,
परळी वैजनाथ. ता. परळी वै. जि. बीड .

सारांशः-

भारत के प्रथम गृहमंत्री और प्रथम उपप्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल को हम लोहपुरूष के नाम से भी जानते है। उनके द्वारा किए गए साहसिक कार्योंकी वजह से ही उन्हे लोहपुरूष और सरदार जैसे उपाधियोंसे नवाजा गया। आज हम जिस कश्मिर से कन्याकुमारी तक फैले विशाल भारत को देख पाते है उसकी कल्पना सरदार वल्लभभाई पटेल के बिना शायद पुरी नही हो पाती, उन्होने ही देश के छोटे छोटे रजवाडों और राजघरानोंको एक कर भारत मे संम्मिलित किया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय एकता की जब भी बात होती है तो सरदार पटेल का नाम सबसे पहले ध्यान मे आता है, उनकी दृढ इच्छाशक्ती नेतृत्व कौशल और अदम्य साहस का ही कमाल था की ६०० देशी रियासतों का भारतीय संघ में विलय हो सका।

बिस्मार्कने जिस तरह जर्मनी के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसी तरह सरदार पटेल ने भी आजाद भारत को एक विशाल राष्ट्र बनाने में उल्लेखनिय योगदान दिया। बिस्मार्क को जहाँ जर्मनी का आयरन चांसलर कहा जाता है वही सरदार पटेल भारत के लोह पुरूष कहलाते है।

सरदार वल्लभभाई का जीवन परिचयः-

सरदार वल्लभभाई पटेल का जन्म ३१ अक्तूबर १८७५ को नाडीयाड ग्राम मे हुआ था। उनके पिता झावेरभाई पटेल एक साधारण किसान और माता लाडबाई एक साधारण महिला थी। सरदार वल्लभभाई पटेल बचपन से ही कडी मेहनत करते आए थे। बचपन से ही खेती में पटेल अपने पिता की सहाय्यता करते थे। पारंपारिक हिंदु माहोल में पले-बढे सरदार पटेल ने करमसद में प्राथमिक विद्यालय और पेटलाद स्थित उच्च विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की । लेकीन उन्होंने अधिकांश

ज्ञान स्वाध्याय से ही अर्जित किया। १६ वर्ष की आयू में उनका विवाह हो गया। २२ साल की उम्र में उन्होंने मॅट्रिक की परीक्षा पास की और जिला अधिवक्ता की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जिससे उन्हें वकालत करने की अनुमती मिली। सरदार पटेल के पिता इबेरभाई एक धर्मपरायण व्यक्ती थे। गुजरात में १८२९ में स्वामी सहजानंद द्वारा स्थापित स्वामी नारायण पंथ के वे परम भक्त थे। ५५ वर्ष की अवस्था के उपरांत उन्होंने अपना जीवन उसी में अर्पित कर दिया था। स्वयं वल्लभभाई पटेल ने कहा है की, "मैं तो साधारण कुटूंब का था, मेरे पिता मंदिर में ही जिंदगी बिताते थे और वही उन्होंने पुरी की।"[१] मातापिता के गुण संयम, साहस, सहिष्णूता, देशप्रेम का प्रभाव वल्लभभाई के परित्र पर स्पष्ट था।

१. स्वतंत्रता आंदोलन में सहभाग:-

सरदार वल्लभभाई पटेल नवंबर १९१७ में अहमदाबाद जिले में अकाल राहत का बहूत व्यवसिथत ढंग से प्रबंधन किया। अहमदाबाद मुन्सीपल बोर्ड से गुजरात सभा को अच्छी धनराशी मंजूर करवाई जिससे इंफ्लुएंजा जैसी महामारी से निपटने के लिये एक अस्थाई अस्पताल स्थापित किया। १९१८ में ही सरकार द्वारा अकाल प्रभावित खेडा जिलेमें वसूले जा रहे लैंड रिवेन्यु के विरूद्ध नो-टॅक्स अंदोलन का सफल नेतृत्व कर वसूली को माफ करवाया। १९२० के असहयोग अंदोलनमें सरदार वल्लभभाई पटेल ने स्वदेशी खादी, धोती, कुर्ता और चप्पल अपनाये तथा विदेशी कपडों की होली जलाई। अहमदाबाद मुन्सीपल चुनाव में सभी ओपन सीटों पर जीत दर्ज की।[२] जनकल्याण और देश के आझादीके लिये चलाये जानेवाले अंदोलनों में सरदार वल्लभभाई पटेल की महत्वपूर्ण भुमिका के चलते उन्हे भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस में महत्वपूर्ण स्थान मिल गया।

२. सरदार वल्लभभाई पटेल और सोमनाथ मंदिर:-

आजादी से पहले जनागढ रियासत के नवाब ने १९४७ में पाकिस्तान के साथ जाने का फैसला किया था। लेकिन भारत ने उनका फैसला स्विकार करने से इनकार करके उसे भारत में मिला लिया। भारत के तत्कालीन उपप्रधानमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल १२ नवंबर १९४७ को जुनागढ पहुँचे। उन्होंने भारतीय सेना को इस क्षेत्र में स्थिरता बहाल करने के निर्देश दिये और साथ ही सोमनाथ मंदिर के पुन:निर्माण का आदेश दिया।[३] सरदार वल्लभभाई पटेल, के. एम. मुन्शी और कॉंग्रेस के दुसरे नेता इस प्रस्ताव के साथ महात्मा गांधीजी के पास गये। ऐसा बताया जाता है की इस फैसले का महात्मा गांधीने स्वागत किया, लेकीन ये भी सुझाव दिया की निर्माण के खर्च में लगनेवाला पैसा जनता से दान के रूप में इकट्ठा किया जाना चाहिए, ना की सरकारी खजाने से दिया जाना चाहिए।

३. बारडोली सत्याग्रह:-

बारडोली सत्याग्रह भारतीय स्वाधिनता संग्राम के दौरान १९२८ में गुजरात में हुआ एक प्रमुख किसान अंदोलन था, जिसका नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया था। उस समय प्रांतीय सरकार ने किसानों के लगान में ३० प्रतिशत तक

की वृद्धी का जमकर विरोध किया। सरकार ने इस सत्याग्रह अंदोलन को मुचलने के लिये कठोर कदम उठाये और अंततः विवश होकर उसे किसानों की मांगों को माननाही पडा। एक न्यायिक अधिकारी ब्लूमफिल्ड और एक राजस्व अधिकारी मॅक्सवेल ने संपूर्ण मामलों की जांच कर बाईस प्रतिशत लगान वृद्धी को गलत ठहराते हुए इसे घटाकर ६.०३ प्रतिशत कर दिया।[४] इस सत्याग्रह अंदोलन के सफल होने के बाद वहाँ की महिलाओं ने सरदार वल्लभभाई पटेल को सरदार की उपाधी प्रदान की। किसान संघर्ष एवं राष्ट्रीय स्वाधिनता संग्राम के अंर्तसंबंधों की व्याख्या बारडोली किसान संधर्ष के संदर्भ में करते हुए गांधीजीने कहा की इस तरह का हर संघर्ष, हर कोशिश हमे स्वराज के करीब पहुँचा रही है। और हम सबको स्वराज की मंजिल तक पहुँचाने में ये संघर्ष सीधे स्वराज के लिए संघर्ष से कई ज्यादा सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

४. सरदार वल्लभभाई पटेल के आर्थिक विचार:-

सरदार वल्लभभाई पटेल के आर्थिक दर्शन के प्रमुख सिध्दांतों में आत्मनिर्भरता थी। वे भारत का औद्योगीकरण जल्दी देखना चाहते थे। बाहरी संसाधनोंपर निर्भरता कम करने की अनिवार्यता। सरदार वल्लभभाई पटेल ने गुजरात में सहकारी अंदोलनों का मार्गदर्शन किया और कायरा जिला सहकारी दुग्ध उत्पादक संघ की स्थापना में मदद की, जो पुरे देश में डेअरी फार्मिंग के लिये एक गेम चेंजर साबित हुआ। सरदार वल्लभभाई पटेल समाजवाद के लिए उठाए गये नारों से नाखुश थे और इसपर बहस करने से पहले भारत के लिये अकसर धन बनाने की जरूरत थी की इसके साथ क्या किया जाए इसे कैसे साजा किया जाए। सरदार वल्लभभाई पटेल ने राष्ट्रीयीकरण को पुरी तरह से खारिज कर दिया और वे नियंत्रण के खिलाफ थे। पटेल निष्क्रिय लोगों के खिलाफ थे। सरदार वल्लभभाई पटेल ने १९५० में कहा था की, लाखों बेकार हाथ जिनके पास काई काम नही है, मशीनों पर रोजगार नही पा सकते है।५ सरदार वल्लभभाई पटेल ने मजदुरों से न्यायपूर्ण हिस्सेदारी का दावा करने से पहले धन बनाने में भाग लेने का आग्रह किया।

५. सरदार वल्लभभाई पटेल की कर्तव्य परायण:-

सरदार वल्लभभाई पटेल एक केस की वकालत कर रहे थे इसी बीच उनकी पत्नी झबेराबेन की हालत बहूत गंभीर हो गई उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। जब उन्हे अपनी पत्नी की हालत की सूचना मिली तो उनकी जगह कोई भी होता तो वह उस केस को बीच में ही छोडकर अपनी पत्नी के पास चला जाता लेकीन दस समय व्यवहारीकतासे काम लेना वाकई कठीण होता है और सरदार वल्लभभाई पटेल अपनी भावनाओं के आगे नही झुके। सरदार वल्लभभाई पटेल उस केस की गंभीरता समझे थे। इसलिये उसे बीच राह में छोडकर नही गये। एक बाजू केस की दलीलें चल रही थी तो दुसरी बाजू सरदार वल्लभभाई पटेल की पत्नी की सांसों की डोर ढिली पड रही थी। अंततः उनकी पत्नी के प्राणोंने उनका साथ छोड दिया लेकिन सरदार वल्लभभाई पटेल की कर्तव्य परायणता ही कहे की वह उस केस को जितने के बाद ही वह अपनी पत्नी

के मृत शरीर के पास पहुँचे। उनका आशय स्पष्ट था की, जो जा रहा है उसे कौन रोक सकता है।[६] लेकीन जिसे बचाया जा सकता है उसे तो बचाना ही चाहीए।

सरदार वल्लभभाई पटेल के जीवन परिचय से यह बात सामने आती है की मणूष्य महान बनकर पैदा नही होता उनके प्रारंभिक जीवन को जानने के बाद हम कह सकते है की, यह आप और हम जैसे ही त्यक्ती थे, जो रूपया, पैसा और एक सुरक्षित भविष्य की चाह रखता है, लेकिन कर्म के पथ पर आगे बढते बढते बेरिस्टर सरदार वल्लभभाई पटेल सरदार पटेल, लौहपुरुष वल्लभभाई पटेल बन गए। सरदार वल्लभभाई पटेल ने राष्ट्रीय एकीकरण कर एकता का एक ऐसा स्वरूप दिखाया जिसके बारे मे उस वक्त कोई सोच भी नही सकता था। उनके इसी कार्य एवं सोच के कारण उनके जन्म दिवस को राष्ट्रीय एकता दिवस का नाम दिया गया। सरदार वल्लभभाई पटेल के बारे में एक कवी कहते है की,

लोह पुरुष की ऐसी छवि।
ना देखी, ना सोची कभी ।
आवाज में सिंह सी दहाड थी।
ऱ्हदय में कोमलता की पुकार थी।
एकता का स्वरूप जो इसने रचा।
देश का मानचित्र पल भर में बदला।।

संदर्भ ग्रंथ सुची :-

१. Bharat discovery.org
२. biography@jivani.org
३. B.B.C. news दि. १५ दिसंबर २०१८
४. Hi.m.wikipedia.org
५. Gk khoj.com
६. M.Jagran.com